अध्याय–1

प्रस्तावना

1.1 .0 प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णतः अभिव्यक्ति है शिक्षा के द्वारा ही एक व्यक्ति सही रूप से चितंन करना सीखता है। केवल किताबी ज्ञान को ग्रहण करना ही शिक्षा नहीं है बल्कि शिक्षा वह है जिससे मनुष्य का चरित्र उत्कृष्ट बने और वह समाज में सुसंस्कृत हो । इसी संदर्भ में काण्ट ने शिक्षा की अपनी परिभाषा में कहा है "शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णतः का विकास है, जिस पर वह पहुँच सकता है। शिक्षा की आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य को है बिना शिक्षा के मानव जीवन भार स्वरूप हो जाता है। कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो कुछ सीखे बिना ही संपूर्ण जीवन व्यतीत कर दे मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के द्वारा ही एक मनुष्य सही मायने में मनुष्य बनता है। शिक्षा को मनोवैज्ञानिक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रकिया मानते है शिक्षा के द्वारा ही एक बालक का संर्वागीण विकास होता है।

शिक्षा को उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी बनाने के लिए प्यक्ति में समयानुसार परिवर्तन अपेक्षित होता है जिससे वो देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका सकुशल निभा सके। शरीर, मन, बुद्धि का विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा का महत्व, उसकी आवश्यकता, विचारधारा आदि को देखा जाये तो शिक्षा के बिना मनुष्य निर्जीव, निष्प्राण, महसूस करेगा। (अतः रिश्ता की तुलना हम अन्न किसी से नहीं कर सकते।) बालक अनौपचारिक रूप से परिवार और समाज से निरतंर कुछ न कुछ सीखते रहता है परंतु औपचारिक रूप से भी शिक्षा आवश्यक होती है। बालक औपचारिक शिक्षा विद्यालय से प्राप्त करता है। विद्यालय में रहकर विद्यार्थी को शिक्षा दी जाती है और

उसका शैक्षिक मूल्याकंन किया जाता है। बच्चा सालभर विद्यालय जाता है और साल के अंत में उसकी परीक्षा ली जाती है ताकि उसकी योग्यता को आंका जा सके। अतः उपलब्धि परीक्षा (Achievment test) के माध्यम से हम बालक की योग्यता की जांच कर सकते है। वर्तमान में विद्यार्थियों की परीक्षा (CCE) (सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन) Continues Comperhensive Evaluation के अंतर्गत ही ली जाती है। यह बालक के शैक्षिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि, न्यायसंगत क्षमता को बढ़ावा देती है जिससे गुणवत्ता विकसित होती है व विद्यार्थियों में निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है।

एक ही कक्षा में कुछ बालक प्रतिभावान होते है जिनको शिक्षक के द्वारा पढ़ाया गया प्रत्येक पाठ समझ में आ जाता है तो दूसरी ओर कुछ ऐसे भी छात्र होते है जिन्हें शिक्षक के द्वारा पढ़ाया गया कुछ समझ नहीं आता तो परीक्षा के दौरान दोंनो ही प्रकार के छात्रों में उनके परीक्षा फल में भी अंतर होता है जहां एक बच्चे को बहुत अच्छे नम्बर आते है तो वहीं दूसरी ओर कुछ बच्चो को खराब नम्बर आते है। वैसे तो कम अंक प्राप्त होने के कई जिम्मेदार कारण हो सकते हैं जैसे–विषय की कठिनता, विद्यालय से घर तक की दूरी शिक्षकों द्वारा कठिन शब्दो का प्रयोग, विषय के प्रति अरूचि घर का वातावरण आदि। बालको की शैक्षिक उपलब्धि के लिये उपरोक्त घटको के अतिरिक्त आन्तरिक व बाह्य घटक भी जिम्मेदार हो सकते हैं। यह घटक निम्नानुसार हैं।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले निम्न कारक हैं –

आंतरिक कारक

- अवधान
- सीखना
- आदतें
- स्मृति
- विस्मरण
- कार्य
- थकान
- बुद्धि
- व्यक्तित्व
- रुचि
- कुण्ठा
- वशानुक्रम
- आत्म संप्रत्यय
- संवेगात्मक बुद्धिमत्ता
- समायोजन

बाह्य कारक

- शाला
- शिक्षा का माध्यम
- शाला का प्रकार
- रुझान
- मित्र मण्डली
- शिक्षक
- विषय वस्तु
- प्रशासन
- समाज का हस्तक्षेप
- घर का वातावरण

वर्तमान समय की बात करे तो मनुष्य दिन प्रतिदिन भौतिकवादी बनता जा रहा है। विज्ञान के नित्य नये अविष्कार का उपयोग करने में बच्चे भी पीछे नहीं है। वह भी भौतिक सुविधाओं का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। इन्टरनेट, वीडियो गेम, फेसबुक, व्हाट्स एप जैसी युक्तियों का उपयोग करने में आज के बच्चे कही भी पीछे नहीं है। आज के विद्यार्थी कम्प्यूटर पर बैठ कर ही पूरी दुनिया की जानकारी रखते हैं।

पर कम्प्यूटर का अत्यधिक प्रयोग करने की वजह से बच्चे घर के सदस्यों से ही दूरी बनाने लगे हैं। खाना खाने की डायनिंग टेबल पर भी एक हाईस्कूल का बच्चा खाना खाते समय परिवार के सदस्यो से बात न करके वीडियो गेम जैसी चीजो से खेलता है। पूर्व में बच्चे मैदान पर खेला करते थे जिससे कि वह अन्य बच्चो से उनकी मुलाकात होती और फिर दोस्ती। इसी कारण बच्चे का तन एवं मन दोनो ही स्वस्थ्य रहता था पर शहरीकरण के इस दौर में मैदानो पर बड़े–बड़े भवन बन गए हैं जिससे बच्चों के खेलने की जगह नहीं मिल पा रही है और इसी कारण बच्चे बाहर निकलते भी नहीं और जब निकलते है तो लोगो के सामने स्वयं को असहज महसूस करते है या अपने परिवार के साथ वह किसी शादी–पार्टी में जाने से अच्छा घर पर एकान्त में भी रहना पसंद करते है। अतः वह अपने आप को समायोजित नहीं कर पाते है

1.2.0 समायोजन

समायोजन व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाली वह सचेतन क्रिया है जिसमें वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं परिस्थितियों के मध्य संतुलन स्थापित करता है। तभी वह अपना कार्य, व्यवहार उचित ढंग से करने में समर्थ होते है। हमारा जीवन चुनौतियों एवं संघर्षो से परिपूर्ण है बालकपन में हमें जीवन की विविध समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो जिस सीमा तक जितने अच्छे ढंग से जीवन संग्राम की लड़ाई को लड़ता जाता है वह उतने ही अच्छे रूप में सफलता प्राप्त करता है। मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त जीवन में हम बहुत कुछ चाहते है और यही चाह हमें पल–पल संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है परंतु बहुत बार ऐसा भी होता है कि जो हम चाहते है जिसके लिए हम दिनरात परिश्रम करते है उस उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। उदाहरण के लिए एक बालक इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए तरह–तरह की परीक्षा देता है परंतु

अथक परिश्रम के बाद भी उसे सफलता नहीं मिलती है। इस हालत में वह अपने लक्ष्य को ही परिवर्तित कर देता है तथा बी.एस.सी. में प्रवेश लेकर आगे एम.एस.सी. तथा प्राध्यापक बनने की बात को पूरा करने के लिए जुट जाता है। एक क्षेत्र में असफलता के बाद दूसरे क्षेत्र का चुनाव करना, अपने लक्ष्य की ऊंचाई को अपनी योग्यता और परिस्थितियों के अनुसार घटा देना, इस प्रकार के संशोधित एवं परिवर्तित व्यवहार को ही समायोजन की संज्ञा दी जाती है।

1.3.0 समायोजन के प्रकार

विद्यार्थी के रूप में एक बालक को निम्न रूप से समायोजन की आवश्यकता होती है जिसके प्रकार नीचे निम्न रूप से दिए गए हैं।

1.3.1 घरेलू समायोजन

विद्यार्थी को अपना घर, घर जैसी ही सुख शांति एवं संतोष प्रदान करने वाला लगना चाहिए तथा उसे अपने परिवार के सदस्यों के साथ उठना–बैठना, रहन–सहन अच्छे लगना चाहिए। जिसे घर काटने को दोड़ता हो या जो विद्यार्थी अधिक से अधिक समय घर से बाहर बिताना पसंद करें, जिस घर के सदस्यों में आपसी वार्तालाप तक समाप्त हो जायें ऐसा घरेलू वातावरण विद्यार्थियों को कुसमायोजित ही करेगा। दूसरे इसके विपरीत एक दूसरे को समझने वाले, स्नेह प्यार से भरे, सहयोगी वातावरण में प्रत्येक सदस्य को पूरी तरह ताल–मेल बिठाकर अपने और परिवार को आगे बढ़ाने में समुचित सहायता मिलती है। ऐसे वातावरण में सभी सदस्यों की व्यक्तिगत तथा सामुहिक आवश्यकताएँ ठीक तरह से होती रहती है और सभी लोग भलीभांति समायोजित रहते है। अतः जिस घर एवं परिवार के सदस्यों में पारस्परिक सहयोग एवं तालमेल रहता है वहां के बच्चों में समायोजित रहने की संभावनाएँ बढ़ती है।

1.3.2 स्वास्थ्य संबंधी समायोजन

यह व्यक्तिगत समायोजन का एक प्रमुख पहलू हो सकता है हर आयु स्तर पर कितना शारीरिक विकास हो इसका एक निर्धारित मापदण्ड होता है। लंबाई, भार तथा शरीर के अंगों का विकास अगर सामान्य स्तर को छूता रहे तो बालक शारीरिक रूप से अपने आप को समायोजित अनुभव करता है। अपने रंग–रूप शरीर की बनावट आदि से भी उसे संतुष्टि का अनुभव होना चाहिए। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे तथा उससे वह संतुष्टि अनुभव करता रहे यह बात भी उसके स्वास्थ्य संबंधी समायोजन का उचित आधार बनती है। इस तरह व्यक्ति की अपनी शारीरिक संरचना उसके विकास, शारीरिक अंगों तथा संस्थानों की कार्यप्रणाली का सामान्य स्वास्थ्य से संतुष्टि का अनुभव करने वाली बातें शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधी समायोजन के क्षेत्र में आती है।

1.3.3 संवेगात्मक समायोजन

हमारे जीवन में संवेगों की बहुत बड़ी भूमिका है। एक बालक को समायोजित होने के लिए संवेगात्मक परिपक्ता का होना अत्यंत आवश्यक है। संवेग हमारे व्यवहार को नियत्रिंत करते है उन्हीं के द्वारा हमारे व्यवहार में परिवर्तन आता है। उचित समय पर उचित संवेगों की अभिव्यक्ति बालक के समायोजन के लिए अत्यंत आवश्यक है जो विद्यार्थी ऐसा नहीं कर पाते वे संवेदात्मक रूप से अस्थिर तथा कुसमायोजित माने जाते है।

1.3.4 विद्यालय समायोजन

एक बालक घर के बाद सबसे सर्वाधिक समय अपने विद्यालय के मित्रों के साथ ही रहता है बालक को सुसमायोजित रहने के लिए यह

आवश्यक है की उसके मित्रों के साथ संपर्क ठीक तरह से कायम रखें जिदंगी के कठिन समय में विद्यार्थियों के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है कि उसके मित्र उसके साथ रहें तो वह कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी स्वयं को समायोजित कर लेगा इसके विपरीत यदि वह अपने मित्रों से एवं अध्यापकों से सही तरह से तालमेल नहीं बिठा पाता तो निश्चित रूप से वह स्कूल में समायोजन नहीं कर सकता।

1.3.5 सामाजिक समायोजन

एक बालक को जितना अपने आप से संतुष्ट तथा समायोजित होने की आवश्यकता होती है उतना ही अपने सामाजिक परिवेश से जुड़ी बातों तथा व्यक्ति के साथ उचित तालमेल बनाये रखकर समायोजित रहने की आवश्यकता होती है। उसे अपने परिवेश में तथा उसमें उपलब्ध परिस्थितियों में भी संतुष्ट अनुभव करना चाहिए। तभी वह ठीक से समायोजित रह सकता है। सामाजिक परिवेश का दायरा उसके घर परिवार से शुरू होकर विद्यालय को छूता है। एक बालक पूर्णतः सामजिक समायोजन तब प्राप्त करता है जब वह घर परिवार, मित्र, सगे संबंधी, पड़ोस समुदाय एवं विद्यालय में समायोजित हो तब वह पूर्णतः सामाजिक समायोजित हो सकता है।

1.4.0 सुसमायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ

सुसमायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. चितंन में परिपक्वता।
2. भावात्मक संतुलन।
3. दैनिक घटनाओं के द्वारा जनित तनाव से मुक्ति।
4. स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम।
5. स्पष्ट उद्देश्य उत्तर दायित्व की भावना।
6. दूसरों को कष्ट न पहुंचाना।

7. दूसरों के प्रति संवेदना की समझ।

1.5.0 शोध का महत्व एवं आवश्यकता

शोधार्थी को यह जानने की जिज्ञासा है कि केन्द्रीय विद्यालयों संगठनों में बालकों के समायोजन से उनकी शैक्षिक उपलब्धि किस प्रकार प्रभावित करती है। विद्यार्थी विद्यालय में पाठ्यक्रम एवं विद्यालयीन गतिविधियों, सहपाठियों के साथ किस प्रकार समायोजित होते हैं जिससे कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि बड़ती है अथवा कम होती है। अनेक बालक विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते इससे उन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह जानने का प्रयास इस शोध प्रबंध में किया गया है।

पूर्व में किये गये शोधो में केन्द्रीय विद्यालयों में समायोजन से संबंधित शोध कम मात्रा में प्राप्त होने के कारण शोधार्थी को समायोजन से संबंधित शोध करने की जिज्ञासा है शोधार्थी को आशा है कि इस शोध के द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है उससे विद्यार्थियों के समायोजन के प्रभाव को देखा जा सकेगा। यह जानकर हमें आने वाले समय में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को जानने में मदद मिलेगी। इस शोध सर्वेक्षण के बाद प्रशासन को यह जानकारी प्राप्त होगी कि केन्द्रीय विद्यालयों में किस प्रकार की क्रियाएँ होने से विद्यार्थियों का समायोजन अधिक होकर शैक्षिक उपलब्धि को अधिक प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षकों को बालकों के व्यवहार एवं समायोजन द्वारा किस प्रकार की शिक्षा दे सकते है यह जानकारी प्राप्त हो सकती है। इस शोध द्वारा विद्यार्थियों के समायोजन से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु काम आने वाली जानकारियां प्राप्त हो सकती है।

1.6.0 समस्या कथन

"भोपाल जिले के केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कक्षा 10वीं के विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध एक अध्ययन"

1.7.0 शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य बनाये गये है। जिससे शोध में प्रयुक्त चरों को प्रत्येक की औसत ज्ञात करके देखा। जिससे सभी चरों के मध्य संबंध एवं अंतर को ज्ञात किया जा सका है। जिससे विशेष जानकारी प्राप्त करने में सहायता मिली है।

1. केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. केन्द्रीय विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
4. केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन ज्ञात करना।
5. केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों का समायोजन ज्ञात करना।
6. केन्द्रीय विद्यालय के छात्राओं का समायोजन ज्ञात करना।
7. केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।
8. केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।
9. केन्द्रीय विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध ज्ञात करना।
10. केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं विषयवार शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध ज्ञात करना।

1.8.0 परिकल्पना के प्रकार

परिकल्पना के प्रकार निम्नलिखित दिये गये हैं –

1. **सकारात्मक परिकल्पना** :–जिसमें दो चरों के संबंध को सकारात्मक रूप से दर्शाया गया हो।
2. **नकारात्मक परिकल्पना** :–जिसमें दो चरों को संबंध को नकारात्मक रूप में दर्शाया गया है।
3. **शून्य परिकल्पना** :–जिसमें समस्या में दो चरों के मध्य संबंध को अंतर रहित रूप में दर्शाया गया हो।

1.9.0 शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है क्योंकि शोध में प्रयुक्त चर शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संबंध में कोई सही दिशा प्राप्त न होने के कारण शोधार्थी ने अपने अनुभव एवं पूर्व ज्ञान के अनुसार शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है जो निम्नलिखित है।

- केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं अंग्रेजी विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं गणित विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं है।

- केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन एवं सामाजिक विज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई संबंध नहीं है।

परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत शोध में परिकल्पना परीक्षण हेतु रूपरेखा के अनुसार प्रमुख चरों शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध एवं अंतर को दिखाने के लिए त सार्थकता तालिका .01 एवं .05 स्तर पर जांचकर परिकल्पना की स्वीकृती एवं अस्वीकृति दी है अंतर की परिकल्पना परीक्षण जांचने के लिए सारणी ज के मान .01 एवं .05 स्तर पर देखकर परिकल्पना का परीक्षण किया है।

1.10.0 अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों का स्पष्टीकरण

लघुशोध में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दो का स्पष्टीकरण इस प्रकार है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तत्वाधान में स्थापित किये गये है। केन्द्रीय विद्यालयों संगठनों कुल संख्या 1086 है एवं तीन विद्यालय विदेशों में संचालित है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन का अस्तित्व 15 दिसम्बर से 1963 को आया। स्थापना के समय केन्द्रीय विद्यालयों का नाम केन्द्रीय स्कूल था तब इसे सी.बी.एस.ई. से संबध्य कर दिया गया था इसका उद्देश्य अक्सर दूर–दराज के स्थानों में तैनात भारतीय सेना के जवानों के बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए किया गया था। केन्द्रीय विद्यालय संगठन का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। केन्द्रीय सरकार के स्थानातंरणीय कर्मचारियों जिसमें सेना एवं अर्द्धसेनिक बलों के कर्मचारी भी शामिल है इनके बच्चों को शिक्षा के सामान्य कार्यक्रम के तहत शिक्षा प्रदान कर उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना है।

1. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठता और गति निर्धारित करना विद्यालय।
2. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परीषद एन.सी.ई.आर.टी. इत्यादि जैसे अन्य निकायों के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग तथा नवाचार को सम्मिलित करना।
3. बच्चों में राष्ट्रीय एकता और भारतीयता की भावना का विकास करना।
4. सभी केन्द्रीय विद्यालयों में समान्य पाठ्यक्रम तथा द्विभाषी माध्यम से शिक्षण सभी केन्द्रीय विद्यालयों में कक्षा पांचवी से आठवी तक संस्कृत का शिक्षण देना।

समायोजन

वोनहेलर :–हम समायोजन शब्द को अपने आप को मनोवैज्ञानिक रूप से जीवित रखने के लिए वैसे ही प्रयोग में ला सकते है। जैसे ही जीवशास्त्री अनुकूलन शब्द का प्रयोग किसी जीव को शारीरिक या भौतिक दृष्टि से जीवित रखने के लिए करते है।

एल.एस.शेफर :– समायोजन वह प्रकिया है जिसके द्वारा कोई जीवधारी अपनी आवश्यकताओं तथा इन आवश्यकताओं की संतुष्टि से संबंधित परिस्थितियों में संतुलन बनाये रखता है।

गेट्स, जेरसिल्ड एवं अन्य :–समायोजन एक ऐसी सतत् प्रकिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।

शैक्षिक उपलब्धि

1. **सुपर** :–एक उपलब्धि या क्षमता परीक्षण यह ज्ञात करने के लिए प्रयोग करता है कि व्यक्ति में क्या और कितना सीखा तथा कोई कार्य कितना भलीभांति कर लेता है।
2. **इबेल** :–शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह अभिकल्पना है जो विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान, कुशलता या क्षमता का मापन करता है।

सकियात्मक परिभाषा :–प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शोधानुसार कुछ परिभाषा का निर्माण किया है जो इस प्रकार है।

1. **शैक्षिक उपलब्धि** :– शैक्षिक उपलब्धि से मेरा आशय है कि विद्यार्थियों को जो कक्षा–कक्ष में जो भी पढ़ाया गया हो, उसमें से उन्होने कितना सीखा है।

2. **समायोजन** :– समायोजन वह परिस्थिति है जिसमें एक बालक या तो परिस्थितियों को अपने अनुसार बदल दे अथवा स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार सुपुर्द कर दें।

1.11.0 शोध की सीमाएँ

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अनेक सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं परंतु इस शोध हेतु समायोजन के साथ शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए लिया गया है। अन्य कारक जो शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं उन्हें हमने इस शोध में शामिल नहीं किया है इसीलिए इस शोध की मुख्य सीमाओं का निर्धारण केवल निम्न आधार पर किया गया है।

प्रस्तुत शोध की सीमाओं का निर्धारण किया गया है जो निम्नलिखित है।

1. प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश के भोपाल जिले के क्षेत्र में ही निहित है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल केन्द्रीय विद्यालयों का चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में केवल शहरी विद्यालयों का चयन किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों पर किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की आयु 16 से 18 वर्ष तक के बीच की है।
6. प्रस्तुत शोध में केवल अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
7. प्रस्तुत शोध में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजनको लिया गया है।